SOCIAL TRANSFORMATION : APPROACH AND ANTICIPATION

Volume 1 : Agents and Agencies of Social Transformation

Proceedings of National Conference
to
Commemorate 550th Birth Anniversary of Guru Nanak Dev Ji
MARCH 01, 2019

Organized by

BHAI GURDAS INSTITUTE OF EDUCATION, SANGRUR
in Collaboration with

COUNCIL FOR TEACHER EDUCATION (CTE),
Punjab & Chandigarh Chapter

Editors
Dr. Amandeep Kaur
Ms. Harjit Kaur
Ms. Jasmeen Kaur

TWENTYFIRST CENTURY PUBLICATIONS
PATIALA

Published in 2019 by

TWENTYFIRST CENTURY PUBLICATIONS
79, Sheikhpura, P.O. Punjabi University, Patiala (PB) - 147002
Ph. 99153-98354, 92167-53888
e-mail : rinku_randhawa77@yahoo.com

In Association with

BOOKMAN
B-41, Sawan Park
Ashok Vihar, Phase - 3
Delhi - 110052

The responsibility for the facts or opinions expressed in the papers are entirely of the authors. Neither the Editors nor the publisher are responsible for the same.

© Reserved

SOCIAL TRANSFORMATION : APPROACH AND ANTICIPATION
(Volume 1 : Agents and Agencies of Social Transformation)
by

Dr. Amandeep Kaur, Ms. Harjit Kaur & Ms. Jasmeen Kaur

ISBN : 978-93-88669-67-2

Price : 600/-

Laser Type Setting
Sandhya Singla & Shivangi Pawar

Printed at :
Twentyfirst Century Printing Press, Patiala

CONTENTS

		Page Nos.
	Message from the Desk of the Chairman	*(v-vi)*
	Message from the Managing Director	*(vii-viii)*
	Foreword	*(ix-x)*
	Preface	*(xi-xii)*
	Acknowledgements	*(xiii-xiv)*
	Report of National Conference	*(xxi-xlix)*
1.	**FACTORS AFFECTING SOCIAL TRANSFORMATION** — *Dr. Amandeep Kaur*	1-3
2.	**PREPARING STUDENTS FOR RAPIDLY CHANGING SOCIETY - A CHALLENGE BEFORE TEACHERS** — *Dr. Anita Arora*	4-6
3.	ਨਰੋਏ ਸਮਾਜ ਦੇ ਸਿਰਜਣਹਾਰ: ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ — *ਐਡਵੋਕੇਟ ਸੁਖਬੀਰ ਸਿੰਘ ਪੰਨਵਾਂ ਅਤੇ ਡਾ: ਬਲਜਿੰਦਰ ਕੌਰ ਸੰਧੂ*	7-12
4.	ਜਪੁਜੀ ਸਾਹਿਬ ਅਤੇ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਦਾ ਵਿਸ਼ਵ-ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਕੋਣ — *ਡਾ. ਕਮਲਜੀਤ ਕੌਰ*	13-16
5.	**TEACHER: AN AGENT OF SOCIAL TRANSFORMATION** — *Dr. Neetu Sethi*	17-19
6.	**EDUCATOR AS A NEGOTIATOR OF SOCIETAL ALTERATION** — *Dr. Papaldeep Gosal*	20-23
7.	शिक्षक: सामाजिक परिवर्तन का एक एजेन्ट — *डा० परमजीत कौर*	24-26
8.	**GURU NANAK DEV JI: PROPHET OF HARMONY AND SOCIAL UPLIFT** — *Dr. Ramandeep Kaur*	27-32

7

शिक्षकः सामाजिक परिवर्तन का एक एजेन्ट

डा० परमजीत कौर*

शिक्षा के द्वारा परिवर्तन प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष से प्रभावित होता है। सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में एक शिक्षक का बहुत बड़ा योगदान होता है। शिक्षक समाज में रह कर काफी जिम्मेदारियों को पूरा करता है। शिक्षक समाज, राष्ट्र और देश में बदलाव लाने वाला होता है। शिक्षक एक नौका एवं सीढ़ी के समान है जो विद्यार्थीयों को उसके वास्तविक उदेश्य तक पहुँचा सकता है। सामाजिक परिवर्तन में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जिसको अनदेखा नहीं किया जा सकता।

इस संसार में परिवर्तन के सिवायें कुछ भी नहीं है। सामाजिक परिवर्तन दो शब्दों के मेल से बना है सामाज व परिवर्तन। सामाज "सोसाईटी" है जिसका अर्थ समाज व सामाजिक सम्बन्धों का जाल है। "परिवर्तन" यथा स्थिति में परिवर्तन से है, जैसी भी स्थिति है उसमें जो बदलाव आता है वही परिवर्तन है।" जब समाज एक स्थिति से दूसरी स्थिति में जाता है। उसे सामाजिक परिवर्तन कहते है।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। परिवर्तन की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। परिवर्तन नहीं होता तो जीवन और संसार की गति रूक जाएगी। इसमें हर एक चीज़ परिवर्तित होती रहती है।

समाज के आधार भूत परिवर्तकों पर प्रकाश डालने वाला एक विस्तृत एंव कार्यप्रणाली का एक नया जन्म होता है। समाज गतिशील है और समय के साथ परिवर्तन अवश्यभावी है।

आधुनिक संसार के प्रत्येक श्रेत्र में विकास हुआ है तथा विभिन्न समाजों ने अपने तरीके से इन विकासों को अपनाया है। उनका उत्तर दिया है, जो कि सामाजिक परिवर्तनों में परिलक्षित होता है। इन परिवर्तनों की गति कभी तेज़ रही है तो कभी धीमी। कभी–कभी ये परिवर्तन बहुत महत्वपूर्ण रहे तो कभी महत्वहीन। कुछ परिवर्तन अचानक होते है, जो हमारी कल्पना से परे और कुछ ऐसे होते है जिसकी भविष्यवाणी संभव थी। कुछ समाजिक परिवर्तन ऐसे होते है जिनको देखा नहीं जा सकता, उनका केवल अनुभव किया जा सकता है।

समाज के किसी भी श्रेत्र में विचलन को सामाजिक परिवर्तन कहा जा सकता है। विचलन का अर्थ यहां खराब या असामाजिक नहीं है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, नैतिक, भौतिक आदि सभी क्षेत्रों में होने वाले किसी भी प्रकार के परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहा जा सकता है। यह विचलन स्वयं प्रकृति के द्वारा या मानव समाज द्वारा योजनाबद्व रूप में हो सकता है। परिवर्तन या तो समाज के समस्त ढाँचे में आ सकता है अथवा समाज के किसी विशेष पक्ष तक ही सीमित हो सकता है। परिवर्तन सर्वकालिक घटना है। यह किसी न किसी रूप में हमेशा चलने वाली प्रकिया है।

* अस्सिटेंट प्रोफैसर, इतिहास विभाग एस. यू. एस कॉलेज, सुनाम